Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPSSSC

AGTA

प्राविधिक सहायक ग्रुप-सी मुख्य परीक्षा

भाग - 3

उत्तर प्रदेश का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	उत्तर प्रदेश की भौगोलिक विशेषता	1
2	उत्तर प्रदेश – कृषि का वाणिज्यकरण एवं उत्पादन	15
3	उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभयारण्य एवं आर्द्र भूमी	19
4	उ.प्र. में मत्स्य, अंगूर, रेशम, फूल, बागवानी, एवं पौध उत्पादन तथा विकास में इनका प्रभाव	24
5	उत्तर प्रदेश का इतिहास, सभ्यता, संस्कृति एवं प्राचीन नगर	29
6	भारत के स्वतंत्रता संग्राम में 1857 से पहले एवं बाद में उत्तर प्रदेश का योगदान	37
7	उत्तर प्रदेश की जनजाति	46
8	उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत	51
9	उत्तर प्रदेश में स्थानीय स्वशासन	61
10	उत्तर प्रदेश में क़ानून व्यवस्था एवं नागरिक अधिकार सुरक्षा	64
11	प्रशासन एवं राजव्यवस्था	68
12	उत्तर प्रदेश की संस्कृति, भाषा एवं साहित्य	83
13	उत्तर प्रदेश में पर्यटन	91
14	शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी	97
15	उत्तर प्रदेश में व्यापर, वाणिज्य एवं उद्योग	102
16	ऊर्जा संसाधन एवं प्रबंधन	107
17	औद्योगिक विकास, शक्ति संसाधन एवं अधोसंरचना	111
18	अधोसंरचना – परिवहन एवं संचार	119
19	उत्तर प्रदेश सरकार की लोक कल्याणकारी योजनायें	127
20	उत्तर प्रदेश की जनांकिकी, जनसंख्या एवं जनगणना	142
21	उत्तरप्रदेश बजट 2026–27	144

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
22	उत्तरप्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26	150

1 CHAPTER उत्तर प्रदेश की भौगोलिक विशेषता

- **क्षेत्रफल** की **दृष्टि** से **उत्तर प्रदेश** राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद **चौथा सबसे बड़ा राज्य** है।
- **2011 की जनगणना** के अनुसार लगभग **20 मिलियन** की **आबादी** सहित **सबसे अधिक आबादी** वाला राज्य।
- उत्तरी भाग **हिमालय** की **शिवालिक पर्वतमालाओं** से घिरा हुआ है
- **पश्चिमी** और **दक्षिणी** भाग **यमुना नदी** और **विंध्याचल** से और **पूर्वी भाग गंडक नदी** से घिरा हुआ है।

उत्तर प्रदेश का स्थान और विस्तार

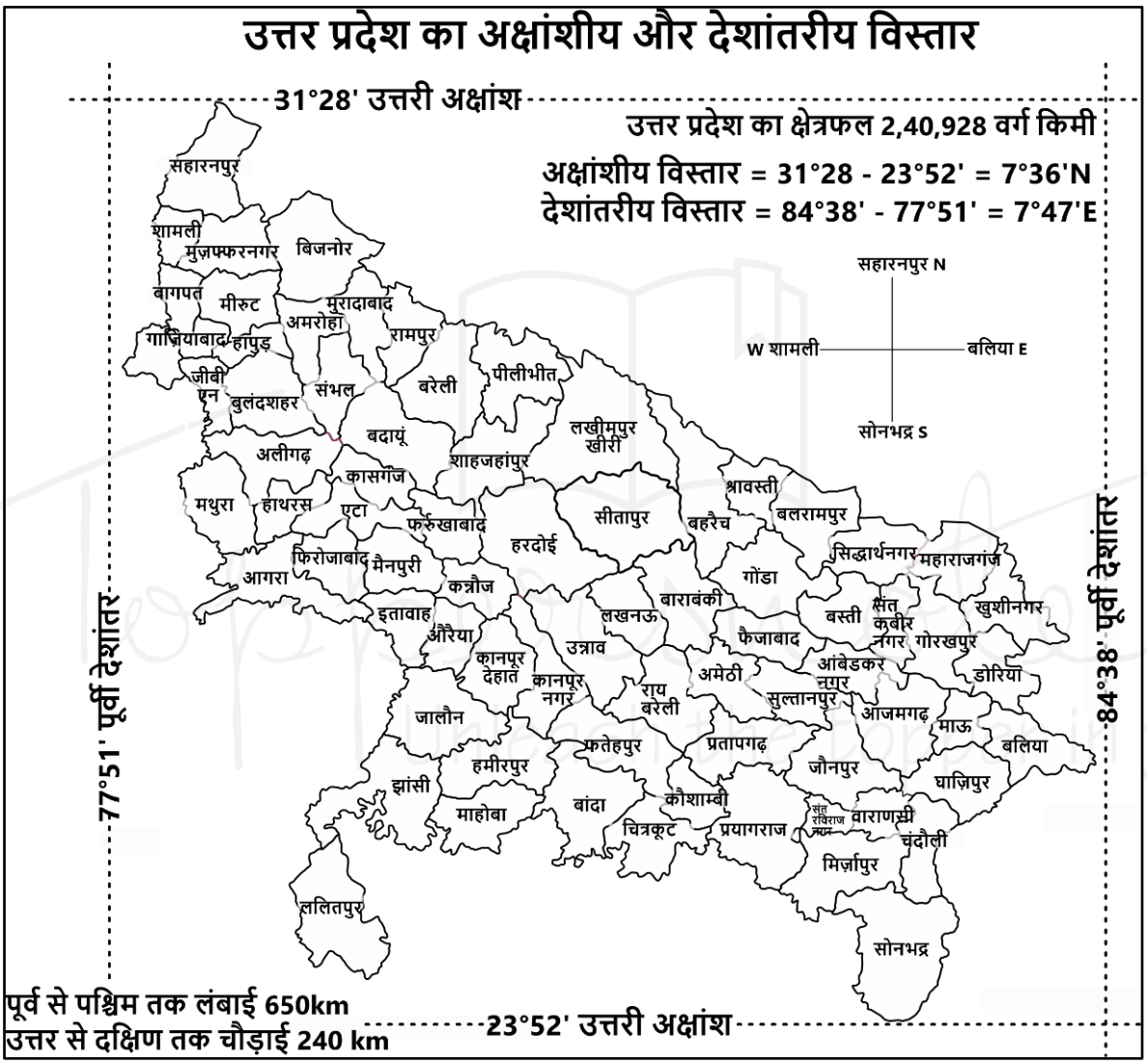

- **अक्षांश:** 23°52' उत्तर और 30°24' उत्तर'
- **देशांतर:** 77°05' पूर्व और 84°38' पूर्व'
- पूर्व से पश्चिम की लंबाई: 650 किमी
  - दक्षिण से उत्तर: 240 किमी।
- **क्षेत्रफल:** 2,40,928 वर्ग किमी क्षेत्र
  - देश के **कुल क्षेत्रफल** का **7.33%**।
- राज्य की सीमा **8 राज्यों** और **1 केंद्र शासित प्रदेश (दिल्ली)** से लगती है।
  - **उत्तर**: नेपाल (अंतर्राष्ट्रीय सीमा) और उत्तराखंड से घिरा
  - **उत्तर-पश्चिम**: हिमाचल प्रदेश
  - **पश्चिम**: हरियाणा और दिल्ली
  - **दक्षिण-पूर्व**: छत्तीसगढ़
  - **पूर्व**: झारखंड और बिहार
  - **दक्षिण-पश्चिम**: राजस्थान
  - **दक्षिण**: मध्य प्रदेश से
- **पूर्वी जिला:** सहारनपुर
- **सबसे दक्षिणी जिला**: सोनभद्र।

उत्तर प्रदेश जिले के साथ सीमा वाले राज्य

राज्य	जिले
हरियाणा	सहारनपुर, शामली, बागपत, गौतम बुद्ध नगर, अलीगढ़ और मथुरा (6 जिले)
राजस्थान	आगरा और मथुरा (2 जिले)
मध्य प्रदेश	आगरा, इटावा, जालौन, झांसी, ललितपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, इलाहाबाद, मिर्जापुर और सोनभद्र (11 जिले)
उत्तराखंड	सहारनपुर, मुजफ्फर नगर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली और पीलीभीत (7 जिले)
छत्तीसगढ	सोनभद्र (केवल 1 जिला)
झारखंड	सोनभद्र (केवल 1 जिला)
हिमाचल प्रदेश	सहारनपुर (केवल 1 जिला)
बिहार	सोनभद्र, चंदौली, गाजीपुर, बलिया, देवरिया, कुशीनगर और महाराजगंज (7 जिले)
दिल्ली (केंद्र शासित प्रदेश)	गाजियाबाद और गौतम बुद्ध नगर (2 जिले)
नेपाल (अंतर्राष्ट्रीय सीमा)	महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर और पीलीभीत (7 जिले)

भूवैज्ञानिक संरचना

- उत्तर प्रदेश का अधिकांश भाग **उत्तर** में **गंगा** के **जलोढ़** से ढका हुआ है जबकि **दक्षिणी** भाग **प्रायद्वीपीय भूभाग** से **आच्छादित** है।
- **जलोढ़ आवरण होलोसीन** युग का है और मुख्य रूप से **वाराणसी** के **पुराने अवसादों** का प्रभुत्व है।
- **पुराने जलोढ़** में महीन दाने वाले, अच्छी तरह से संकुचित और अधिक परिपक्व तलछट होते हैं जो अपेक्षाकृत अधिक ऊंचाई पर व्यापक रूप से फैले हुए होते हैं।
- उत्तर प्रदेश का **प्रायद्वीपीय भाग आर्कियन** से **मेसोजोइक युग** की चट्टानों से ढका हुआ है।

- **बुंदेलखंड विंध्य** सुपरग्रुप की तलछटी इकाइयों द्वारा ढका हुआ है जो मुख्य रूप से दक्षिणी यूपी में दिखाई देते हैं और कुछ **आगरा** जिले में देखे गए हैं।
- उत्तर प्रदेश के **ललितपुर जिले** में भी **डेक्कन ट्रैप चट्टाने** मिलती है।

विंध्य रॉक सिस्टम

- दक्षिणी यूपी में **प्लेट ऑल-रीजन** शामिल है, जो **विंध्य रेंज** या **रॉक सिस्टम** का एक हिस्सा है।
- इस शैल तंत्र का निर्माण **कैम्ब्रियन पूर्व काल** में हुआ था।
- इन चट्टानों में **चूना पत्थर**, **डोलोमाइट** और **बलुआ पत्थर** जैसे विभिन्न खनिज शामिल थे।
- उनके पास कोई **जीवाश्म अवशेष** नहीं है।
- **कैमूर श्रृंखला विंध्याचल रॉक सिस्टम** द्वारा बनाई गई थी।
    - इस रॉक श्रृंखला में **बलुआ पत्थर**, **क्वार्ट्ज** और **कांग्लोमरेट** खनिज शामिल हैं।

बुंदेलखंड ग्रेनाइट नाइस

- इसका गठन **पूर्व-पुरापाषाण युग** में हुआ था।
- इसमें **लाल ऑर्थोक्लेज़**, **फेल्डस्पार**, **रेड क्वार्ट्ज**, **हॉर्नब्लेंड**, **क्लोराइड** आदि जैसे खनिज होते हैं।
- इन कठोर **लाल बलुआ पत्थरों** का उपयोग **आगरा** और इसके आसपास के **मुगल काल** के **भवनों** में किया गया था।

तृतीयक कल्प

- इस काल में **हिमालय पर्वत श्रृंखला** का निर्माण हुआ।
    - यह **अंगारालैंड** और **गोंडवानालैंड** के बीच स्थित **टेथिस सागर** में तलछटी और कायांतरित चट्टानों के जमाव और उत्थान के कारण था।
    - इस श्रेणी को **शिवालिक** के नाम से जाना जाता है।
- **शिवालिक पर्वतमाला** में **रेत**, **कंकड़ पत्थर** और **कांग्लोमेरेट** शामिल हैं।

चतुर्थक कल्प

- चतुर्थक कल्प में **भाबर** और **तराई** क्षेत्रों का निर्माण हुआ।
- इन पेटियों में मुख्य रूप से **बलुआ पत्थर**, **बालू**, **कंकड़** आदि पाए जाते हैं।
- भाबर और **तराई** क्षेत्र नदियों द्वारा **तेजी** से **कटाव** और **जमाव** के परिणाम हैं।
- प्लेइस्टोसिन **काल** में गंगा-यमुना के **विशाल मैदान** का निर्माण शुरू हुआ और यह प्रक्रिया आज भी जारी है।

उत्तर प्रदेश के भौतिक प्रभाग

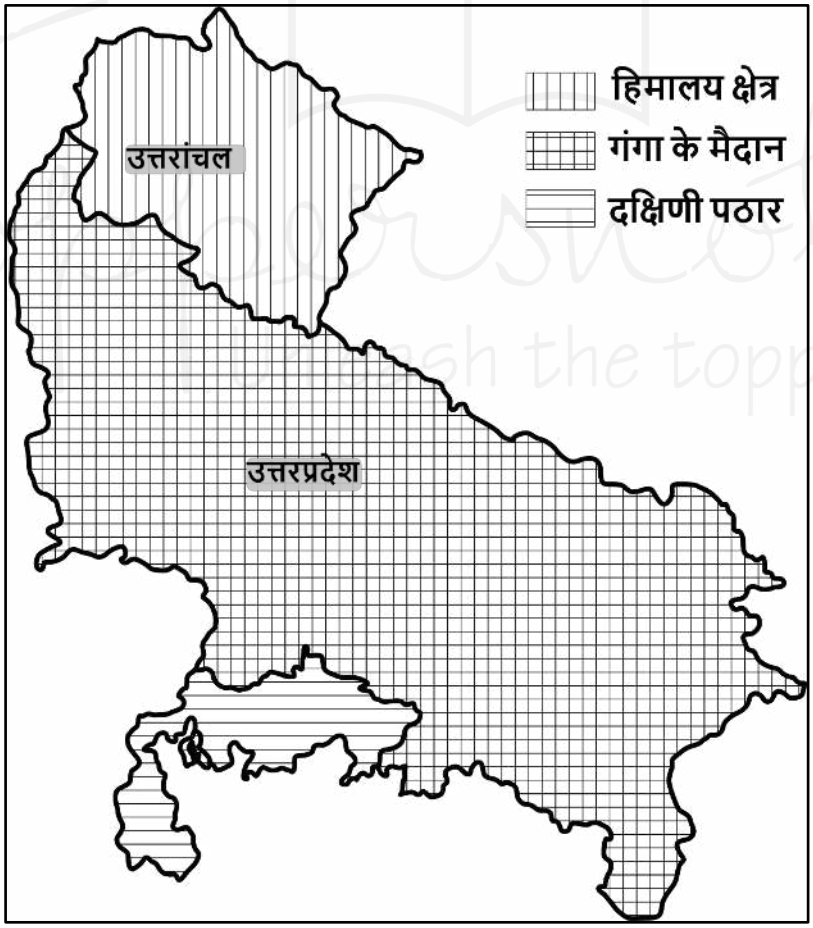

- उत्तर प्रदेश को तीन अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है:
    - **भाबर** और **तराई** बेल्ट
    - **गंगा** का मैदान
    - **पठारी क्षेत्र** और **विंध्य रेंज**

भाबर और तराई बेल्ट

- उप-हिमालयी **तराई क्षेत्र** के साथ चलने वाली **संक्रमणकालीन बेल्ट** को तराई और **भाबर बेल्ट** कहा जाता है।
- यह क्षेत्र **पश्चिम** में **सहारनपुर** जिले से लेकर **पूर्व** में **देवरिया** तक **फैला** हुआ है।

भाबर क्षेत्र

- उत्तर प्रदेश का **सबसे उत्तरी भाग।**
- **विस्तार**: सहारनपुर से कुशीनगर (पडरौना)।
- **तराई क्षेत्र** के उत्तर में स्थित है।
- यह क्षेत्र **बोल्डर** (बड़ी चट्टानें) और **कंकड़** (छोटे पत्थर) से बना है जो नदी की धाराओं द्वारा नीचे ले जाया गया है।
- **धाराएँ भूमिगत** रूप से बहती हैं क्योंकि इस क्षेत्र में **मिट्टी अत्यधिक पारगम्य** है।
- **क्षेत्र**: सहारनपुर, बिजनौर, शाहजहांपुर, लखीमपुर खीरी और पीलीभीत जिले।

तराई क्षेत्र

- **विस्तार**: उत्तर पश्चिम में सहारनपुर से पूर्व में देवरिया तक।
- **भाबर** क्षेत्र के **दक्षिण** में स्थित है।
- यह **पूर्वी** यूपी में लगभग **80-90 किमी चौड़ा** है और **पश्चिम** की ओर **संकरा** हो जाता है।
- **समतल नम** और **दलदली** मैदानी क्षेत्र, जो **महीन गाद** से बनता है।
- **भाबर** क्षेत्र में **भूमिगत बहने** वाली **नदियाँ तराई** क्षेत्र में फिर से **प्रकट** होती हैं।
- **वनस्पति**: साल, सेमल, हल्दू, तेंदू आदि और सवाना प्रकार की घास पाई जाती हैं

गंगा का मैदान

- **विस्तार**: उत्तर में **भाबर-तराई क्षेत्र** और दक्षिण में **पठारी क्षेत्र** के बीच।
- **इलाहाबाद** (प्रयागराज) में **त्रिवेणी संगम** में तीन नदियों - **गंगा, यमुना और सरस्वती** का संगम है।
- गंगा का मैदान **यमुना**, **गंगा** और उसकी **सहायक नदियों** जैसे **रामगंगा**, **गोमती**, **घाघरा**, **गंडक** और **शारदा** आदि द्वारा बहा कर लाये गये **जलोढ़** से बनता है जो अपने साथ **तलछट** लाती है और इस क्षेत्र में **जमा** करती है।
- इस मिट्टी की **गहराई 4500** मीटर तक है।
- **ऊंचाई**: 80 मीटर से 250 मी. और इस क्षेत्र का **ढाल उत्तर-पश्चिम** से **दक्षिण-पूर्व** की ओर है।
- यह एक बहुत ही **उपजाऊ मैदान** है जहाँ **रबी** और **खरीफ** की फसलें उगाई जाती हैं, उदा. चावल, गेहूं, बाजरा, चना आदि
  - **गन्ना** इस क्षेत्र की **प्रमुख नकदी फसल** है।
- आगे संरचनात्मक रूप से यह **मैदानी** क्षेत्र **दो भागों** में **विभाजित** है:
  - **बांगर भूमि**
    - उच्च भूमि जो **बाढ़** के **पानी** से **मुक्त** हो।
    - अपने **पुराने जलोढ़ निक्षेपों** के लिए प्रसिद्ध है।
    - खादर भूमि की तुलना में कम उपजाऊ।
  - **खादर भूमि**
    - निचला भूमि क्षेत्र जहां **जलभराव** देखा जाता है।
    - **हर साल बाढ़ से मिट्टी जमा** होती है और बांगर भूमि की तुलना में भूमि उपजाऊ होती है।
    - खादर भूमि के कुछ हिस्सों में यमुना और चंबल जैसी नदियों द्वारा कटाव की प्रक्रिया का सामना करना पड़ता है।
- यहां खड्डे दिखाई देते हैं और मिट्टी उपजाऊ नहीं होती है।
- **क्षेत्र**: फर्रुखाबाद, हरदोई, कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, सुल्तानपुर, रायबरेली, फतेहपुर, प्रतापगढ़ और उत्तरी इलाहाबाद।
- **वर्षा**: 80-100 सेमी
  - इस क्षेत्र में **वर्षा** की **भिन्नता** देखी जा सकती है क्योंकि **कानपुर**, **एटावा** और **फर्रुखाबाद** में **औसत वार्षिक वर्षा** क्रमशः **85 सेमी**, **81 सेमी** और **79 सेमी** होती है।
- **गर्मी** के मौसम में धूल भरी आंधी और पश्चिमी हवाएं चलती हैं जिन्हें लू कहा जाता है।
  - इस प्रकार, 44°C तापमान के साथ गर्मी का मौसम बहुत गर्म रहता है।

दक्षिण का पठारी क्षेत्र

- इस क्षेत्र में **विंध्य पहाड़ियाँ** और **पठार** शामिल हैं
- इसे **बुंदेलखंड** का **पठार** भी कहते है।
- उत्तरी भाग **गंगा-यमुना नदियों** से घिरा हुआ है,
  - **दक्षिणी भाग**: विंध्य रेंज
  - **पूर्वी भाग**: केन नदी और
  - **पश्चिमी भाग**: बेतवा नदी।
- प्राचीन **नाइस चट्टानों** से बना है।
- इस क्षेत्र की औसत **ऊंचाई 300 से 450 मीटर** है। और ऊंचाई **दक्षिण** से **उत्तर** की ओर **घटती** जाती है।
- **तापमान**:
  - **गर्मी का मौसम:** 40 डिग्री सेल्सियस से 45 डिग्री सेल्सियस तक।
  - **सर्दी का मौसम:** 18°C से 19°C तक।
- **वर्षा:** क्षेत्र में कम वर्षा होती है।
  - इस क्षेत्र में **औसत वार्षिक वर्षा 80 सेमी** से **100 सेमी** तक होती है।
- **महत्वपूर्ण फसलें:** ज्वार, सरसों, चना और गेहूं।
  - कम वर्षा के कारण **शुष्क खेती** बड़े पैमाने पर की जाती है
- **मुख्य नदियाँ:** बेतवा, चंबल, सोन, केन और टोंस
  - केन और बेतवा यमुना में शामिल होने के लिए **बुंदेलखंड क्षेत्र** से गुजरते हैं।

- **क्षेत्र: इलाहाबाद** जिले की झांसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, चित्रकूट, ललितपुर, बांदा, मेजा और करछना तहसील, गंगा नदी के दक्षिण में स्थित मिर्जापुर का हिस्सा और **चंदौली जिले** की चकिया तहसील।

उत्तर प्रदेश की नदियाँ और जल निकासी प्रणाली

- भूवैज्ञानिक रूप से, उत्तर प्रदेश प्राचीन गोंडवानालैंड का हिस्सा है और दक्षिण में पठारी क्षेत्र उत्तर की ओर प्रायद्वीपीय भारत का एक विस्तार है जो पूर्व-कैम्ब्रियन काल में गठित विंध्य चट्टानों से बना है।

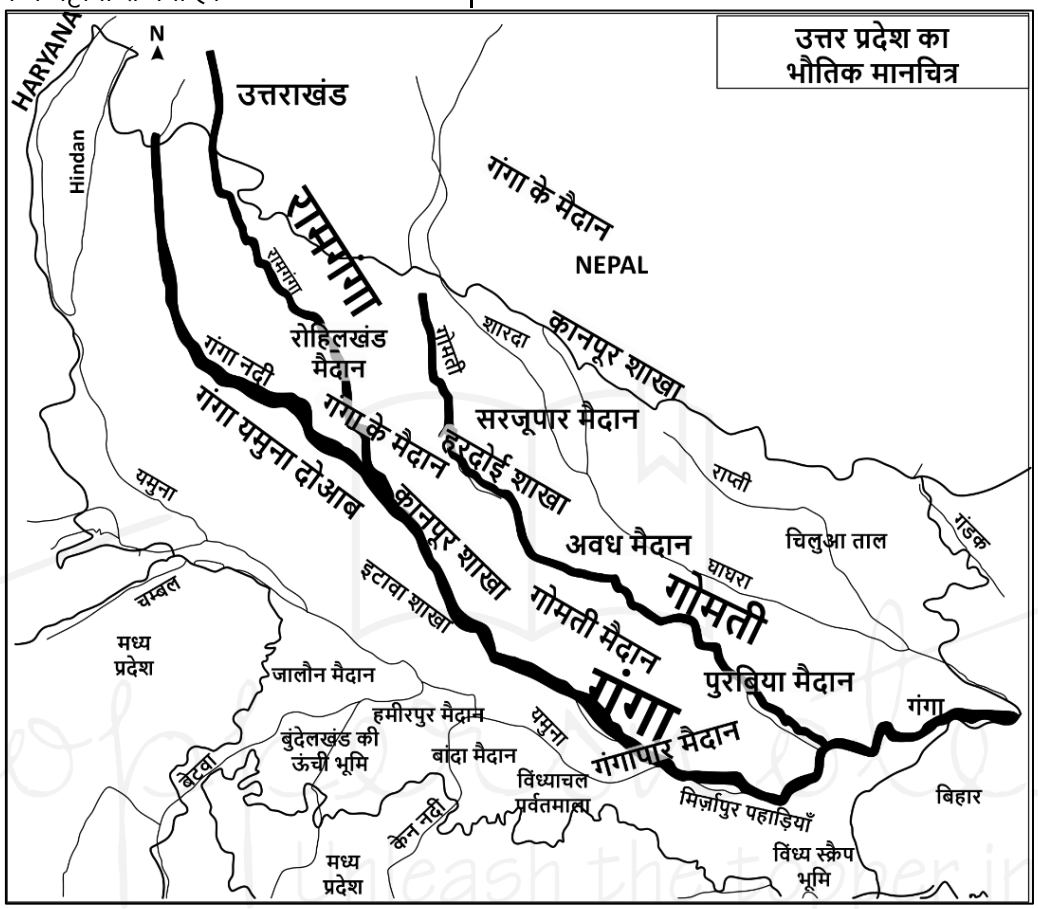

- यूपी में करीब 31 नदियां हैं, जिनमें लंबी और छोटी दोनों नदियां शामिल हैं।
- मोटे तौर पर, उत्तर प्रदेश से होकर बहने वाली नदियों को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है
  - हिमालय पर्वतमाला
  - विंध्य पर्वतमाला
  - मैदानी इलाके

हिमालय पर्वत से निकलने वाली नदियाँ

- हिमालय पर्वतमाला से निकलने वाली प्रमुख नदियाँ यमुना, गंगा, रामगंगा, शारदा (जिसे काली भी कहा जाता है), राप्ती और गंडक हैं।
- ये पश्चिम से पूर्व दिशा में बहती हैं।

यमुना:

- यह गंगा की सबसे लंबी दाहिनी ओर की सहायक नदी है और राज्य में गंगा के बाद दूसरी सबसे लंबी नदी है।

उत्तर प्रदेश की नदियाँ

- राज्य की अधिकांश नदियाँ उत्तर पश्चिम से दक्षिण दिशा की ओर बहती हैं क्योंकि उत्तर प्रदेश का उत्तरी और पश्चिमी भाग अपेक्षाकृत ऊँचा है और हिमालय के पहाड़ों में पर्याप्त जल संसाधन हैं।

- उद्गम स्थल: उत्तराखंड के उत्तरकाशी में यमुनोत्री ग्लेशियर।
- सहारनपुर के फैजाबाद में यूपी में प्रवेश किया।
- इसके बाद, यह यूपी और हरियाणा के बीच की सीमा बनाती है।
- यह त्रिवेणी संगम, प्रयागराज में गंगा नदी में विलीन हो जाती है, जहाँ कुंभ मेला लगता है जो हर 12 साल में आयोजित एक हिंदू त्योहार है।
- यह सिंधु-गंगा का मैदान में अपने और गंगा नदी के बीच एक अत्यधिक उपजाऊ जलोढ़ यमुना-गंगा दोआब क्षेत्र के निर्माण में मदद करता है।
- **सहायक नदियों:**
  - बायां किनारा: हिंडन, रिंद, सेंगर और वरुण।
  - दायां किनारा: चंबल, सिंध, बेतवा, केन।

गंगा:

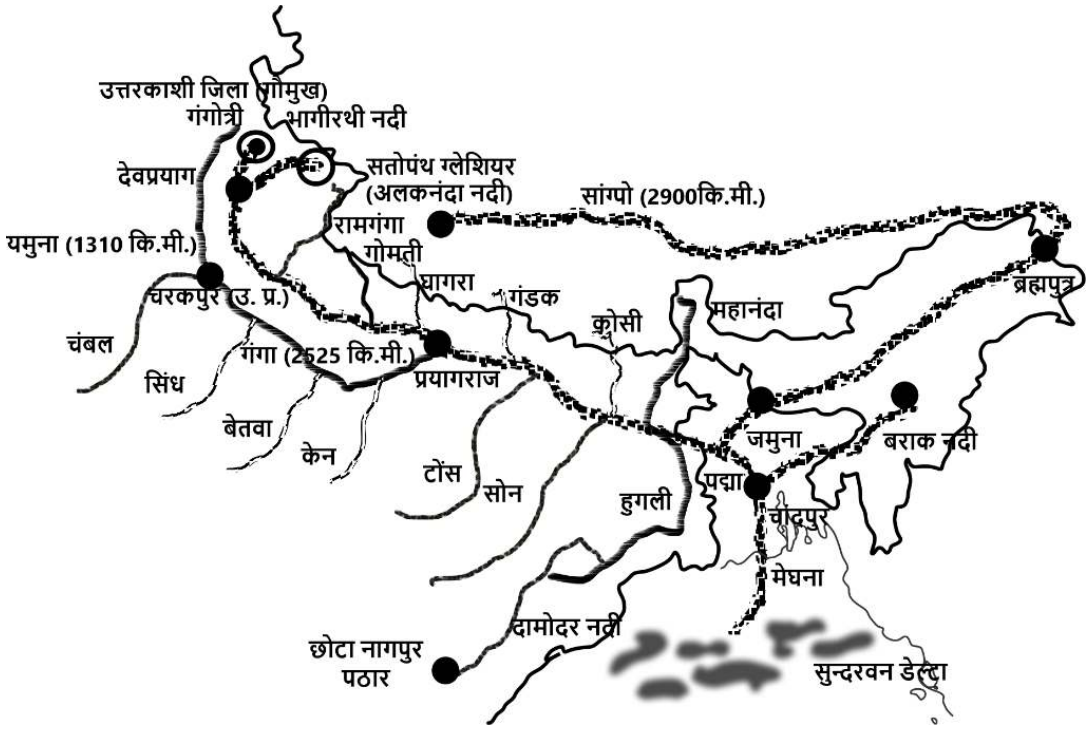

- **उत्पत्ति:** उत्तराखंड के गोमुख उत्तरकाशी
- **कुल लंबाई:** 2525 किमी।
  - यूपी में इसकी कुल लंबाई 1000 किमी है।
    - यह राज्य की सबसे लंबी नदी है।
- यह बिजनौर में राज्य में प्रवेश करती है और बलिया में निकलती है।
- राज्य के लगभग 28 जिलों से होकर बहती है।
- ऊपरी गंगा नदी (बृजघाट से नरोरा खंड): रामसर सम्मेलन स्थल।
  - नदी ।IUCN रेड लिस्टेड गंगा नदी डॉल्फिन (EN) और गंभीर रूप से लुप्तप्राय घड़ियाल के लिए आवास प्रदान करती है।
- बाएं **तट की सहायक नदियाँ:**
  - **रामगंगा**
    - हरदोई में गंगा से मिलता है
    - जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क से होकर गुजरता है,
  - **गोमती**
    - **वाराणसी में गंगा से मिलता है**
  - **घाघरा**
  - **गंडक**
    - **दाहिने किनारे की सहायक नदियाँ:**
  - **यमुना**
    - प्रयागराज **में गंगा से मिलती है**
  - **टोंस**
    - प्रयागराज **के पास गंगा से मिलती है**
  - **सोन**
- जिन **जिलों से होकर गंगा बहती है: मुजफ्फरनगर, बिजनौर, बदायूं, कासगंज, इटावा, फर्रुखाबाद, शाहजहांपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात, कानपुर नगर, कन्नौज, फतेहपुर, कौशांबी, इलाहाबाद (प्रयागराज), भदोही, मिर्जापुर, चंदौली , वाराणसी, गाजीपुर और बलिया जिले।**

तराई या मैदानी क्षेत्र से निकलने वाली नदियाँ:

गोमती:

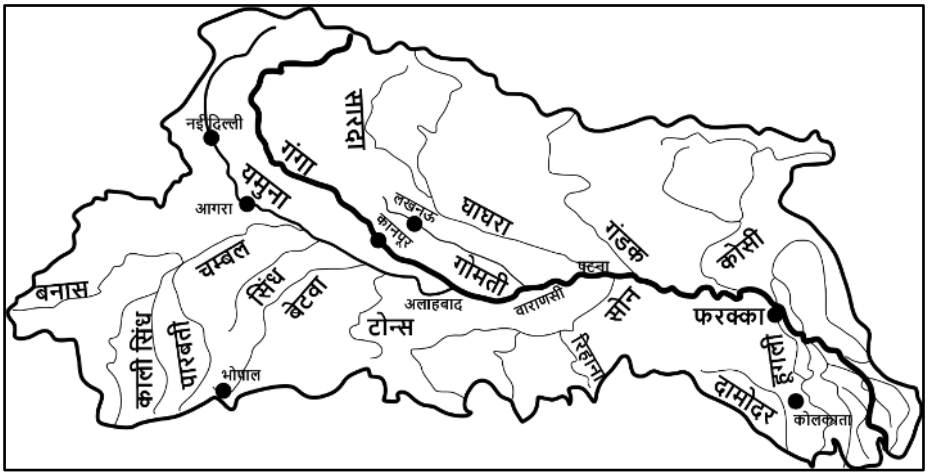

- **उत्पत्ति:** गोमत ताल से जो फुलहार झील के नाम से जाना जाता है, माधो टांडा के पास, यूपी में पीलीभीत।
- यह यूपी में 900 किमी तक फैली हुई है और गाजीपुर में गंगा नदी से मिलती है।
- **गोमती और गंगा के संगम पर प्रसिद्ध मार्कंडेय महादेव मंदिर स्थित है।**
- **महत्वपूर्ण सहायक नदी: सई नदी, जो जौनपुर के पास मिलती है।**
- **लखनऊ, लखीमपुर खीरी, सुल्तानपुर और जौनपुर शहर गोमती के तट पर स्थित हैं**
- **यह जौनपुर शहर को बराबर हिस्सों में बांटती है और जौनपुर में फ़ैल जाती है।**

वरुणा:

- **यह गंगा की छोटी सहायक नदी है।**
- **उद्गम: प्रयागराज में फूलपुर और वाराणसी जिले में सराय मोहना के पास गंगा में विलीन हो जाती है।**
- **प्रतापगढ़ जिले में सराय मोहना और सदर के बीच 6 किलोमीटर की दूरी पर बाढ़ का खतरा है।**

सई

- इसे आदि गंगा नाम से भी जाना जाता है।
- यह गोमती नदी की सहायक नदी है।
- उद्गम स्थल: उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में परसोई की पहाड़ी की चोटी।
- लखनऊ को उन्नाव से अलग करती है।

विंध्य पर्वतमाला या पठारी क्षेत्र से निकलने वाली नदियाँ:

चंबल

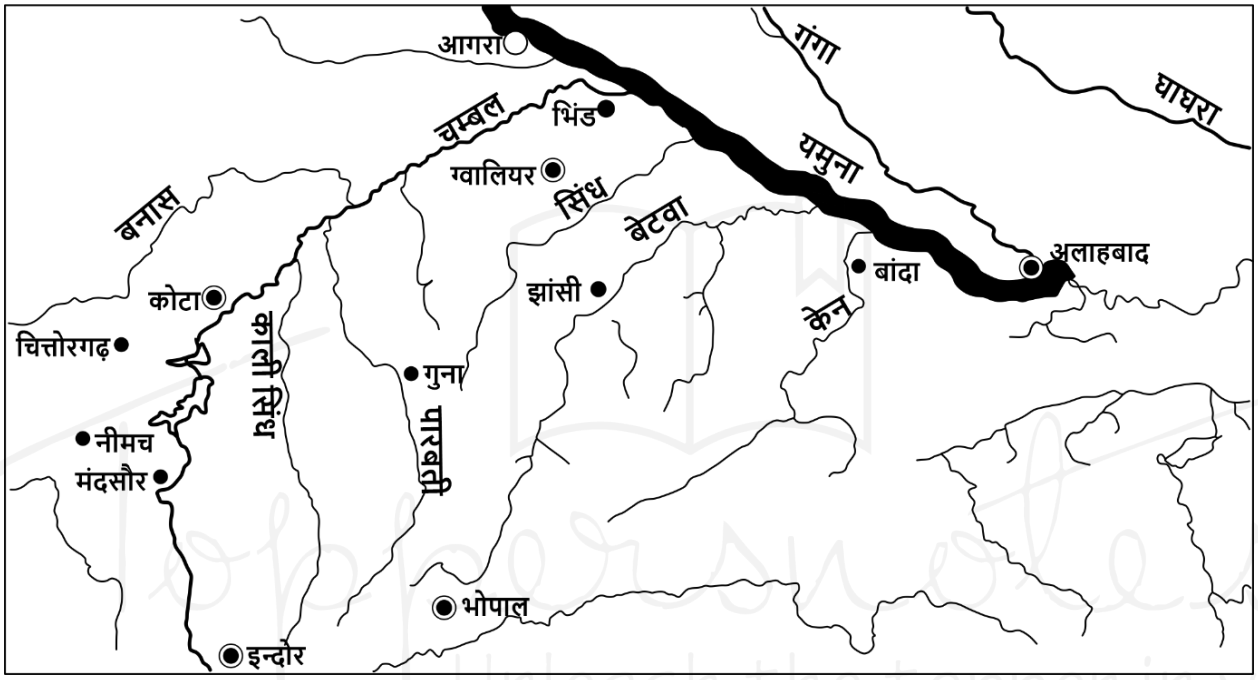

- **भारत में सबसे अधिक प्रदूषण मुक्त नदियों में से एक।**
- **यह 960 किमी लम्बी नदी है।**
- **उद्गम: विंध्य पर्वत (इंदौर, मध्य प्रदेश) के उत्तरी ढलानों में सिंगार चौरी चोटी।**
- **वहां से, यह मध्य प्रदेश में उत्तर दिशा में बहती है और फिर राजस्थान के माध्यम से उत्तर-पूर्व दिशा का अनुसरण करती है।**
- **यह यूपी में प्रवेश करती है और इटावा जिले में यमुना में शामिल होने से पहले लगभग 32 किमी तक बहती है।**
- **यह एक वर्षा आधारित नदी है और इसका बेसिन विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं और अरावली से घिरा है।**
- **चंबल और उसकी सहायक नदियाँ उत्तर-पश्चिमी मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में बहती हैं।**
- **सहायक नदियाँ: बनास, काली सिंध, पार्वती।**

सिंद

- **यह यमुना नदी की एक सहायक नदी है जो एमपी और यूपी से होकर बहती है।**
- **उद्गम: विदिशा जिले में मालवा का पठार और मध्य प्रदेश में उत्तर-उत्तर पूर्व की ओर बहती है और यमुना के साथ चंबल नदी के संगम के ठीक बाद, जालौन जिले, यूपी में यमुना में मिलती है।**

केन

- **उद्गम स्थल: मध्य प्रदेश में कैमूर की पहाड़ियाँ।**
- **बांदा में यमुना से मिलती है**
- **यह यमुना की एक सहायक नदी है और यूपी और एमपी से होकर बहती है।**
- **केन नदी पर स्थित रानेह जलप्रपात और केन घड़ियाल अभयारण्य पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं।**

सोन

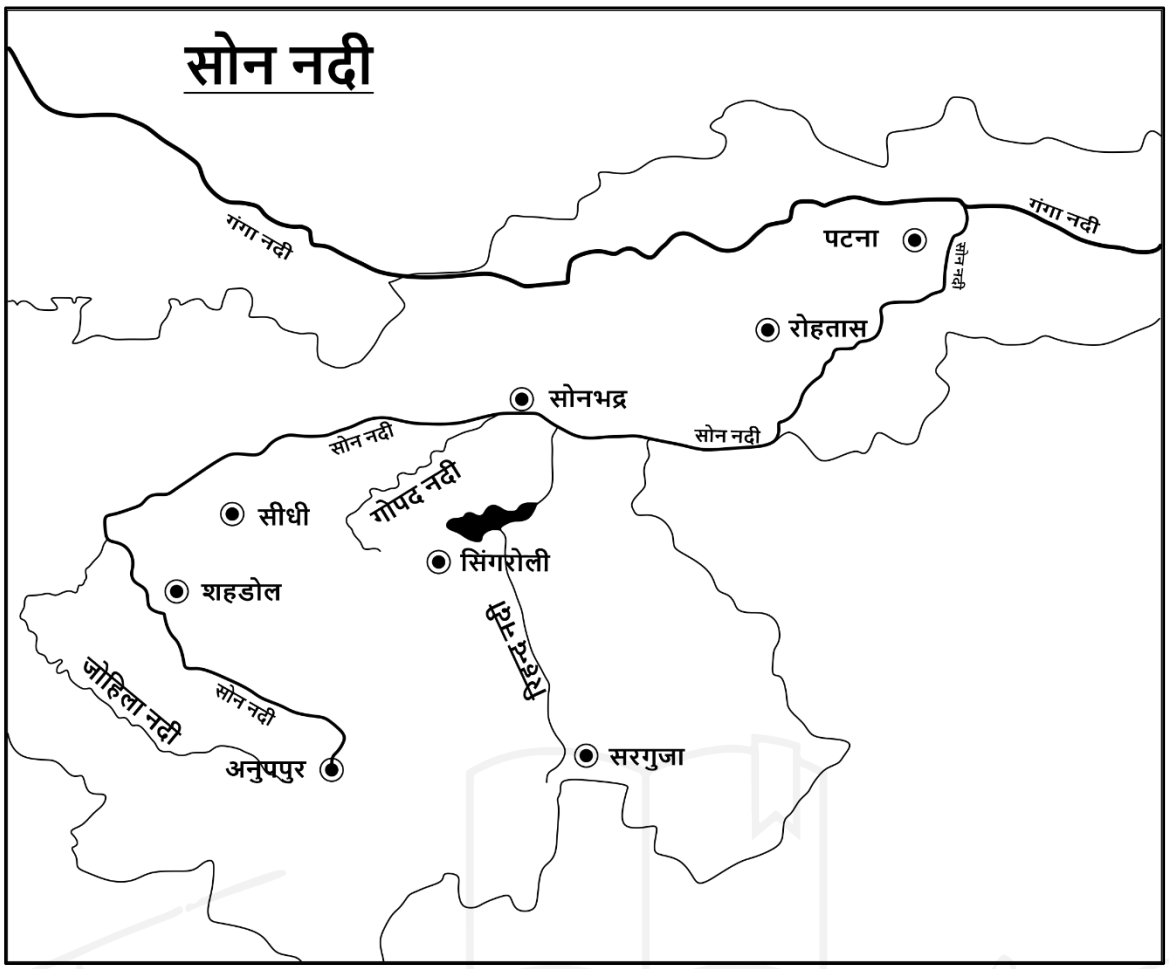

- उद्गम स्थल: अमरकंटक की पहाड़ियाँ में शोसाकुंड से
- कैमूर रेंज के साथ बहती है।
- यूपी में सोनभद्र के माध्यम से बहती है और पटना के पश्चिम में गंगा से मिलती है।
- रिहंद सोन की सहायक नदी है जों सोनभद्र में मिलती है।
- महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ: जोहिला, गोपत, रिहंद, कन्हार और उत्तरी कोयल।
- लगभग सभी सहायक नदियाँ इसके दाहिने किनारे पर मिलती हैं।

रिहंद:

- उत्पत्ति: मतिरंगा पहाड़ियाँ, मैनपाट पठार के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में।
- यह सोन नदी की एक सहायक नदी है और छत्तीसगढ़ और यूपी से होकर बहती है।

बेतवा

- लखीमपुर जिले में यूपी में प्रवेश करती है और हमीरपुर के पास यमुना से मिलती है।
- इसे वेत्रावती के नाम से भी जाना जाता है।
- उद्गम: मप्र में होशंगाबाद के उत्तर में विंध्य रेंज से और यूपी पहुंचने से पहले ओरछा से उत्तर-पूर्व में बहती है।
- अपने मार्ग के लगभग आधे हिस्से तक मालवा पठार के माध्यम से होकर बहती है, जो कि नौगम्य नहीं है।

अन्य महत्वपूर्ण नदियाँ

हिंडन

- उत्पत्ति: सहारनपुर जिला, यूपी में ऊपरी शिवालिक से।
- यमुना नदी की सहायक नदी।
- सिंधु घाटी सभ्यता में उल्लेख किया गया है क्योंकि खुदाई में इस नदी के उत्तर में कुछ बस्तियां पाई गई थीं।
- हिंडन नोएडा में यमुना से मिलती है।
- भारतीय वायु सेना का हिंडन वायु सेना बेस गाजियाबाद में इसके तट पर स्थित है।

घाघरा

- यह एक बारहमासी नदी है जो मानसरोवर झील के पास से निकलती है, और उत्तर प्रदेश में ब्रह्मघाट में शारदा नदी में मिलती है।
- बिहार के दारीगंज में गंगा में मिलती है।
- आयतन की दृष्टि से गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी।
- नदी का ऊपरी भाग गंगा की डॉल्फ़िन के लिए प्रसिद्ध है।

घाघरा नदी राष्ट्रीय जलमार्ग के रूप में

- **नौवहन मंत्रालय के सागरमाला कार्यक्रम के तहत घाघरा नदी का राष्ट्रीय जलमार्ग (एनडब्ल्यू)-40 के रूप में विकास कार्य उत्तर प्रदेश के बस्ती से शुरू होना है।**
- **गंगा-घाघरा नदी के संगम पर मांझीघाट से फैजाबाद/अयोध्या तक घाघरा नदी के किनारे 354 किलोमीटर लंबे जलमार्ग को वर्ष 2016 के दौरान एनडब्ल्यू-40 के रूप में घोषित किया गया था।**
- **इस जलमार्ग को तृतीय श्रेणी जलमार्ग के रूप में वर्गीकृत किया जा रहा है जिसमें 1000 टन क्षमता वाले जहाजों की आवाजाही की परिकल्पना की गई है।**
- **कार्गो और यात्री आवाजाही के अलावा, NW-40 घाघरा और गंगा नदियों के किनारे पर्यटन और तीर्थ स्थलों को कनेक्टिविटी प्रदान करेगा।**

रामगंगा

- **गंगा नदी की सहायक नदी**
- **दक्षिण-पश्चिम कुमाऊं में बहती है।**
- **उद्गम स्थल: उत्तराखंड के चमोली जिले में द्वाधातोली पहाड़ी के दक्षिणी ढलान।**
- **भूमिगत जल के जलाशयों से झरनों द्वारा जलापूर्ति**
- **प्रमुख भू-आकृतिक विशेषताएं: मेन्डर्स, पेयर और अनपेयर्ड टेरेस, इंटरलॉकिंग स्पर्स, झरने, रॉक बेंच, चट्टानें, और विशाल रिज**
- **यह कॉर्बेट नेशनल पार्क की द्वून वैली से भी बहती है।**
- **कालागढ़ में रामगंगा पर एक बांध बनाया गया है**
- **कन्नौज के पास गंगा से मिलती है।**
- **बरेली शहर इसके तट पर स्थित है।**

सरयू

- **उत्तराखंड और यूपी से होकर बहती है**
- **इस नदी का प्राचीन महत्व है क्योंकि इसका उल्लेख वेदों और रामायण में मिलता है।**
- **करनाली और महाकाली नदियों के संगम से उत्पन्न।**
- **गंगा नदी की सहायक नदी।**
- **रामनवमी पर अयोध्या में हजारों लोग सरयू नदी में डुबकी लगाते है।**
- **अयोध्या सरयू नदी के तट पर स्थित है।**

सरयू नहर राष्ट्रीय परियोजना

- **हाल ही में प्रधानमंत्री ने उद्घाटन किया**
- **क्षेत्र के जल संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए पांच नदियों - घाघरा, सरयू, राप्ती, बाणगंगा और रोहिणी को आपस में जोड़ना।**
- **इससे पूर्वी उत्तर प्रदेश के नौ जिलों बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, गोंडा, सिद्धार्थनगर, बस्ती, संत कबीर नगर, गोरखपुर और महराजगंज को लाभ होगा।**
- **परियोजना 1978 में शुरू हुई लेकिन निरंतरता की कमी के कारण इसमें देरी हुई और लगभग चार दशकों के बाद भी पूरी नहीं हुई।**

तमसा

- **उद्गम: अयोध्या जिले में ग्राम लखनीपुर**
- **गंगा की सहायक नदी**
- **पवित्र नदी: ऐसा माना जाता है कि इस नदी के तट पर भगवान राम ने अपने 14 साल के वनवास पर जाते हुए अपनी पहली रात बिताई थी।**
- **अयोध्या जिले में लगभग 150 किलोमीटर तक बहती है।**
- **समय के साथ विभिन्न तरीकों से प्रदूषित हो गई और गंभीर स्थिति में है।**
- **2019: यूपी सरकार ने पवित्र नदी को पुनर्जीवित करने के लिए एक योजना शुरू की।**

राप्ती

- **पश्चिम राप्ती मध्य-पश्चिमी क्षेत्र, नेपाल, फिर यूपी के अवध और पूर्वांचल क्षेत्रों में राप्ती क्षेत्र में बहती है।**
- **घाघरा, नेपाल में करनाली के नाम से जानी जाने वाली गंगा की प्रमुख बाएँ किनारे की सहायक नदी, में मिलती है।**
- **यह जातीय समूहों के लिए उल्लेखनीय है - अपने उच्चभूमि स्रोतों में खाम मगर**
  - **थारू जनजाति**
- **बार बार आने वाली बाढ़ के कारण गोरखपुर का शोक के नाम से जानी जाती है।**

कन्हार

- **उत्पत्ति: गिधा-धोधा**
- **झारखंड, छत्तीसगढ़ और यूपी से होकर बहती है।**
- **छत्तीसगढ़ में, यह खुदिया पठार से निकलती है और उत्तर प्रदेश में सोनभद्र जिले में बहती है।**
- **सोन की सहायक नदी।**

उत्तर प्रदेश की जलवायु

- उत्तर प्रदेश की **जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसून** प्रकार की होती है जहाँ **सर्दी** का **मौसम बहुत ठंडा** होता है और **गर्मी** का **मौसम बहुत गर्म** होता है।
- इसे **आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय शुष्क सर्दियों** (सीडब्ल्यूए) प्रकार के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें **पश्चिमी यूपी** के कुछ हिस्सों को **अर्ध-शुष्क** (बीएस) प्रकार का बताया गया है।
- **कोपेन जलवायु वर्गीकरण** के आधार पर, इसे ज्यादातर **शुष्क सर्दियों** के प्रकार के साथ **आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय** के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, **पूर्वी यूपी** के कुछ हिस्सों को **अर्ध-शुष्क** (बीएस) प्रकार के रूप में **वर्गीकृत** किया जा सकता है।
- **पहाड़ियों** की **उपस्थिति** और **समुद्र** से **दूरी** के कारण राज्य बड़े पैमाने पर **जलवायु परिवर्तन** का अनुभव करता है।
- **तीन प्रमुख मौसम**:
  - **सर्दी** का **मौसम** - नवंबर से फरवरी
  - **गर्मी** का **मौसम** - मार्च, अप्रैल और मई
  - **दक्षिण-पश्चिम मानसून** - जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर और अक्टूबर

- मानसून के पीछे हटने का प्रभाव बहुत ही नगण्य होता है और सर्दियों में केवल कभी-कभार हल्की बौछारें पड़ती हैं।
    - इनमें से कुछ **बारिश पश्चिमी विक्षोभ** के कारण होती है।
- उत्तर प्रदेश के तीन अलग-अलग **मौसमों** के **प्राथमिक तापमान**, **वर्षा** और **हवा** की विशेषताएं:
    - **गर्मी** (मार्च-जून): **गर्म और शुष्क** (तापमान 45 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है, कभी-कभी 47-48 डिग्री सेल्सियस)**; कम सापेक्ष आर्द्रता** (20%); **धूल भरी हवाएं**।
    - **मानसून** (जून-सितंबर): **990 मिमी औसत वार्षिक वर्षा** का **85**%। बरसात के दिनों में तापमान 40-45° गिर जाता है।
    - **सर्दी** (अक्टूबर-फरवरी): **ठंड** (तापमान 3-4 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है, कभी-कभी -1 डिग्री सेल्सियस से नीचे); **साफ आसमान**; **कुछ इलाकों में कोहरे की स्थिति**।
- महत्वपूर्ण जलवायु अंतर को देखते हुए, **यू.पी**. **दो मौसम विज्ञान उपखंडों** में **विभाजित** किया गया है - **यू.पी. पूर्व और यू.पी. पश्चिम**।
- **हवाई अड्डे**, लखनऊ में स्थित **आईएमडी कार्यालय मौसम संबंधी** सभी **पूर्वानुमान** और **विवरण** प्रदान करने के लिए **नोडल** है।

जलवायु का वर्गीकरण

आर्द्र और उष्णकटिबंधीय क्षेत्र

- यह दो उपसमूहों में विभाजित है
    - तराई क्षेत्र
        - **दलदली भूमि हिमालय** की **तलहटी** में स्थित है।
        - तराई क्षेत्र में औसत **वार्षिक वर्षा 120-150 सेमी** है और औसत **तापमान** क्रमशः **जनवरी** और **जुलाई** में **18 डिग्री से 30 डिग्री सेल्सियस** है।
    - पूर्वी उत्तर प्रदेश
        - **क्षेत्र**: बहराइच, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, बलिया, आजमगढ़, फैजाबाद, सुल्तानपुर, जौनपुर, गाजीपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, इलाहाबाद और प्रतापगढ़ जिले
        - इस क्षेत्र में **औसत वार्षिक वर्षा 100-120 सेमी** है और वर्षा की मात्रा पूर्व से पश्चिम की ओर घटती जाती है।

मध्यम आर्द्र और उष्णकटिबंधीय क्षेत्र

- इस क्षेत्र में **मध्य मैदान**, **पश्चिमी मैदान** और **बुंदेलखंड** के **पहाड़ी** और **पठारी** क्षेत्र शामिल हैं।
- इन क्षेत्रों में **औसत वार्षिक वर्षा 50-100 सेमी** से भिन्न होती है।

वर्षा

- उत्तर प्रदेश में **वर्षा गर्मी** की घटना है।
    - भारतीय **मानसून** की **बंगाल की खाड़ी शाखा** वर्षा का प्रमुख वाहक है।
    - **दक्षिण पश्चिम मानसून** अधिकांश वर्षा लाता है, हालांकि **पश्चिमी विक्षोभ** के कारण बारिश और **उत्तर-पूर्वी मानसून** भी राज्य की समग्र वर्षा में कम मात्रा में योगदान देता है।
- **दक्षिण-पश्चिम मानसून** (जून, जुलाई, अगस्त और सितंबर) वर्षा (799 मिमी) का **वार्षिक वर्षा** (946 मिमी) में **84.4%** योगदान है।
- **जुलाई** के दौरान **औसत मासिक वर्षा** (268 मिमी) सबसे अधिक होती है जों **वार्षिक वर्षा** में लगभग **28.3%** का योगदान करती है।
- अगस्त के दौरान **औसत वर्षा** थोड़ी कम होती है और **वार्षिक वर्षा** में लगभग **26.5%** योगदान करती है।
- **जून** और **सितंबर** की **वर्षा, वार्षिक वर्षा** में क्रमशः **11.2% और 18.4%** का योगदान करती है।
- वार्षिक वर्षा में **प्री-मानसून** (मार्च, अप्रैल और मई) **वर्षा** और **मानसून** के **बाद** (अक्टूबर, नवंबर और दिसंबर) **वर्षा** का **योगदान** क्रमशः **7.1% और 4.9%** है।
- नवंबर, दिसंबर, जनवरी और फरवरी के दौरान **भिन्नता** का **गुणांक** अधिक होता है।

उत्तर प्रदेश में मृदा

- उत्तर प्रदेश का अधिकांश क्षेत्र **गंगा प्रणाली** की धीमी गति से बहने वाली नदियों द्वारा फैली **जलोढ़** की **गहरी परत** से ढका हुआ है।
- अत्यधिक उपजाऊ **जलोढ़ मिट्टी रेतीली** से लेकर **चिकनी दोमट मिट्टी** तक होती है।
- दक्षिणी भाग में **मिट्टी** आमतौर पर **लाल** और **काली** या **लाल** से **पीली** मिश्रित होती है।

मिट्टी का वर्गीकरण

- **नदी घाटियों** में पाए जाने वाले अवशेषों को छोड़कर **उत्तर प्रदेश** में पाई जाने वाली **मिट्टी** ज्यादातर **पुरानी प्रकृति** की है।
- **क्षेत्रीय कारकों** और **मिट्टी** के लाभ के आधार पर, **मिट्टी** में **विविध विविधताएँ** होती हैं।
- मृदा को **तीन उपशीर्षों** में **वर्गीकृत** किया जा सकता है।
    - **भाबर** और **तराई** क्षेत्र की मिट्टी
    - **गंगा** के **मैदानों** की मिट्टी
    - **दक्षिणी पठार** की मिट्टी

भाबर और तराई क्षेत्र की मिट्टी

- कोई समतल भूमि उपलब्ध नहीं है और हिमालयी क्षेत्र में भूभाग अत्यधिक परिवर्तनीय है।
- **मिट्टी** बनाने वाली **प्रमुख चट्टानें ग्रेनाइट**, शिस्ट, नीस, शेल्स, सैंडस्टोन, फाइलाइट, क्वार्टजाइट आदि हैं।
- **मिट्टी रेतीली** से **दोमट** तक भिन्न होती है।
- वे थोड़े **अम्लीय** और **कम उपलब्ध जल क्षमता** (AWC) प्रकार की होती हैं।
- इन क्षेत्रों में आम तौर पर **गेहूं**, **मक्का**, **चावल** और **दलहन** जैसी **फसलों** की खेती की जाती है।

भाबर क्षेत्र की मिट्टी

- **भाबर क्षेत्र** लगभग 8-16 किमी चौड़ा है जो **शिवालिक तलहटी** के साथ चलता है।
- **हिमालय** से निकलने वाली **नदियाँ** अपनी **भूमि** को **तलहटी** के साथ **जलोढ़ पंख** (अक्सर कंकड़ वाली मिट्टी) के रूप में जमा करती हैं।
- यह **मिट्टी बहुत उथली** है।
- यह क्षेत्र **कृषि** के लिए **उपयुक्त नहीं** है क्योंकि इस क्षेत्र की मिट्टी **झरझरा** है।
- इस क्षेत्र में केवल **बड़ी जड़ों** वाले **बड़े पेड़** ही पनपते हैं।

तराई क्षेत्र की मिट्टी

- यह क्षेत्र **भाबर** के **दक्षिण** के **समानांतर** चलता है और **नए जलोढ़** से बना है।
- यह लगभग **15-30 किमी** चौड़ा है।
- **भाबर क्षेत्र** की भूमिगत धाराएँ इस पेटी में फिर से उभर आती हैं और इसे **सिल्की मिट्टी** वाली **दलदली नीची भूमि** बना देती हैं।
- **मिट्टी नाइट्रोजन** और **कार्बनिक पदार्थों** से भरपूर होती है लेकिन इसमें **फॉस्फेट** की **कमी** होती है।
- आम तौर पर यह क्षेत्र **लंबी घास** और **जंगलों** से ढका होता है लेकिन यह कई **फसलों** जैसे **गेहूं**, **चावल**, **गन्ना, जूट** आदि के लिए उपयुक्त है।
- **तराई बेल्ट रेत** और **चिकनी मिट्टी** का क्षेत्र है।

गंगा के मैदानों की मिट्टी

- **जलोढ़ मिट्टी** आमतौर पर विभिन्न प्रकार की सामग्रियों से बनी होती है, जिसमें **गाद**, **मिट्टी** के **महीन कण** और **रेत** और **बजरी** के **बड़े कण** शामिल हैं।
- इस क्षेत्र की मिट्टी **मोटे दोमट / महीन दोमट / महीन सिल्टी** (कैल्केरियस और नॉन-कैल्केरियस) है।
- इनमें **हल्की क्षारीयता** होती है और गहरी मिट्टी की गहराई के साथ-साथ **कार्बनिक पदार्थों** की **उच्च सामग्री** और **पौधों** के **पोषक तत्व** प्रदर्शित होते हैं।
- इनमें **जल धारण क्षमता** अच्छी होती है और ये **अच्छी जल निकासी** वाली होती हैं।
- गेहूँ, चावल, गन्ना, चना, मक्का, ज्वार, जौ और मटर गंगा के मैदानी इलाकों की **जलोढ़ मिट्टी** में उगाई जाने वाली **प्रमुख फसलें** हैं।
- मिट्टी की **रासायनिक संरचना** इस **मिट्टी** के समूह को **दुनिया** में सबसे **अधिक उपजाऊ** बनाती है।
- **जलोढ़ मिट्टी** में, **नाइट्रोजन** और **जीवाश्म** आम तौर पर कम होते हैं लेकिन **पोटाश**, **फॉस्फोरिक एसिड** और **क्षार** पर्याप्त होते हैं, जबकि **आयरन ऑक्साइड** और **चूना** एक **विस्तृत श्रृंखला** में भिन्न होते हैं।
- **नई** और **पुरानी** के आधार पर **जलोढ़ मिट्टी** को **दो भागों** में बांटा गया है:
    - बांगर मिट्टी
    - खादर मिट्टी

बांगर मिट्टी

- मैदान के सबसे **बड़े हिस्से** को **कवर** करता है।
- **उच्च मैदानी** क्षेत्रों में पाए जाते हैं जो **बाढ़** के **पानी** से **मुक्त** होते हैं।
- स्थानीय रूप से **कांकर** के रूप में जानी जाने वाली यह मिट्टी **कैल्शियम** के कारण **बहुत उपजाऊ नहीं** है और **लेटराइट निक्षेपों** से **आच्छादित** एक **नीची** भूमि है।
- यह **पुरानी** और **परिपक्व जलोढ़ मिट्टी** है क्योंकि **खादर मिट्टी** की तुलना में इसे बार-बार **नवीनीकृत नहीं** किया जाता है।

खादर मिट्टी

- यह **मिट्टी उत्तर प्रदेश** के **मैदानी क्षेत्र** में पाई जाती है।
- यह महीन, **हल्के भूरे रंग** की, **झरझरी मिट्टी** है और इसमें **जल धारण** करने की **क्षमता** होती है।
- यह **व्यापक खेती** के लिए **बहुत उपयुक्त** है क्योंकि इसमें **कैल्शियम नहीं** होता है।
- बार-बार **बाढ़** आने के कारण यह **मिट्टी बार-बार नवीनीकृत** होती है इसलिए इसे **खाद** की **आवश्यकता नहीं** होती है।
- यह **नए जलोढ़** और **महीन दानों** से बनी है।
- मिट्टी को विभिन्न नामों से भी जाना जाता है जैसे **रेतीली, रेतीली गाद, दोमट मिट्टी या चिकनी दोमट**।
- इस मिट्टी में **चूना**, **पोटाश**, **मैग्नीशियम** और **कार्बनिक** पदार्थ पाए जाते हैं।

भूर और रेगिस्तानी मिट्टी

- यह **गंगा** नदी के किनारे विशेष रूप से **ऊपरी गंगा यमुना दोआब** में पाई जाती है।
- **भूर** की **मिट्टी रेतीली** नहीं बल्कि **हल्की बलुई दोमट मिट्टी** के मिश्रण से बनती है।

गंगा के मैदानों की पूर्वी, पश्चिमी और मध्य श्रेणियों की मिट्टी

- **गंगा क्षेत्र** को भी **पश्चिमी**, **मध्य** और **पूर्वी श्रेणियों** में विभाजित किया गया है।
- **पश्चिमी क्षेत्र:** मिट्टी ज्यादातर **गहरे भूरे रंग** की और **दोमट** से **रेतीली दोमट प्रकृति** की होती है।
- **मैदानी क्षेत्र:** इस क्षेत्र यानि सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और मेरठ जिलों में गहरी और **उपजाऊ मिट्टी** पाई जाती है।
- **पूर्वी भाग:** यहाँ भारी **दोमट मिट्टी** पाई जाती है जैसे **बरेली**, **बिजनौर**, **पीलीभीत** और **मुरादाबाद।**
- गंगा के मैदान के **पूर्वी भाग** में **तीन प्रकार** की **मिट्टी** होती है**, भाट, बांगर और धूह**।
    - **भाट चूना** से भरपूर है।
    - **धूह** मिट्टी **जलमग्न मिट्टी** है जो **नदी** के **किनारे** पाई जाती है।
- **मध्य** क्षेत्र: **बलुई दोमट मिट्टी**
- उत्तर-पूर्वी भाग (खीरी और सीतापुर): **दोमट** या **रेतीली दोमट मिट्टी** जो प्रकृति में थोड़ी **अम्लीय** होती है।

- इस क्षेत्र के **उत्तर-पश्चिमी** भाग को **फास्फेटिक कमी पेटी** माना जाता है।
- **जौनपुर**, **आजमगढ़** और **मऊ** जिलों में पाई जाने वाली **मिट्टी** में **पोटाश** की **कमी** होती है।
- इस क्षेत्र के **शुष्क भाग** में जों मिट्टी है जिसे **'उसर'** और **'रेह'** के नाम से जाना जाता है।
- यह मिट्टी **उत्तर** प्रदेश के **अलीगढ़**, एटा**, इटावा**, **सीतापुर**, **उन्नाव**, **कानपुर**, **मैनपुरी**, **रायबरेली** और **लखनऊ** जिलों में पाई जाती है।

दक्षिणी पठार की मिट्टी

- दक्षिणी पठार का निर्माण प्रीकैम्ब्रियन काल में हुआ था जिसे बुंदेलखंड और बघेलखंड क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है।
- इस क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टी को बुंदेलखंड मिट्टी के रूप में जाना जाता है।
- क्षेत्र: गंगा के दक्षिण में और राज्य के पूरे दक्षिणी क्षेत्र में व्याप्त है।

दक्षिणी पठारी क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टियाँ इस प्रकार हैं:
लाल मिट्टी

- **लाल बलुआ पत्थर** की चट्टानों के **अपक्षय** द्वारा निर्मित।
- **आयरन ऑक्साइड** की उपस्थिति के कारण **मिट्टी** का **रंग लाल** होता है।
- **मूल सामग्री: क्रिस्टलीय** और **मेटामॉर्फिक चट्टानें** जैसे **एसिड ग्रेनाइट**, **नीस** और **क्वार्टजाइट।**
- **क्षेत्र**: मिर्जापुर, इलाहाबाद के दक्षिणी भाग, सोनभद्र, झांसी, बांदा, हमीरपुर और चंदौली, हमीरपुर और चंदौली के **जलभराव वाले क्षेत्रों** में पाया जाता है।

काली मिट्टी या रेगुर मिट्टी

- **पश्चिमी जिले** और **उत्तर प्रदेश** के **बुंदेलखंड** क्षेत्र में पाया जाता है।
- यह **चिकनी मिट्टी** की **प्रकृति** की होती है।
- इसे आम तौर पर **मार** और **का**बर के नाम से जाना जाता है।
- **मार** और **काबर मिट्टी कैल्शियम युक्त** और **उपजाऊ** होती है।
- **मार** मिट्टी की तुलना में **काबर मिट्टी कम जल धारण** करने वाली मिट्टी है।
- यह **मिर्जापुर**, **झांसी** और **सोनभद्र** जिलों में पाई जाती है।
- कहीं-कहीं पर यह **लाल मिट्टी** में **मिश्रित** होती है।

परवा मिट्टी

- यह **बलुई दोमट मिट्टी** का **हल्का लाल-भूरा** रंग है, जिसमें **कार्बनिक पदार्थ कम** होते हैं।
- इस मिट्टी को **पड़वा** या **पडुवा** के नाम से भी जाना जाता है।
- यह **हमीरपुर**, **जालौन** और **यमुना** नदी के तटीय भाग में विशेष रूप से **घाटियों** में पाया जाता है।
- **मिट्टी उर्वरकों** और **सिंचाई** के उचित उपयोग से **बाजरा** (खरीफ) और **चना** (रबी) की उत्कृष्ट पैदावार देती है।

मार/माफ मिट्टी

- यह **काले रंग** की होती है और मोटे तौर पर **प्रकृति** में **काली** या **रेगुर मिट्टी** की तरह **चिकनी** होती है लेकिन **उपजाऊ नहीं** होती।
- यह **अत्यधिक नमी धारण** करने वाली होती है।

राकर मिट्टी

- **पहाड़ी** और **पठारी** क्षेत्रों के **ढलान** वाले **क्षेत्र** इस मिट्टी से आच्छादित हैं।
- **मिट्टी गहरी राकर** और **पतली राकर** में **विभाजित** है।
- इस मिट्टी की **उर्वरा शक्ति** को **उर्वरकों** के प्रयोग से **बढ़ाया** जा सकता है।
- आम तौर पर इस **मिट्टी** में **तिल** (**खरीफ**) और **चना** (**रबी**) जैसी **फसलें उगाई** जाती हैं।

मोंटा मिट्टी

- यह **मिट्टी विंध्य पर्वतीय क्षेत्रों** में टूटे हुए **कंकड़** के रूप में पाई जाती है।
- **अपक्षय** की **धीमी प्रक्रिया** के कारण ये **कंकड़ बारीक रेत** में बदल जाते हैं।
- इस **मिट्टी** का **रंग लाल** होता है।
- आम तौर पर इस **मिट्टी** में **बाजरा** जैसे **अनाज** उगाए जाते हैं।

उत्तर प्रदेश में खनिज संसाधन

- उत्तर प्रदेश देश के **एंडलुसाइट** और **डायस्पोर संसाधनों** का प्रमुख धारक है और इसके पास **78% एंडलुसाइट**, **37% डायस्पोर** और **10% पायरोफिलाइट** है।
- **महत्वपूर्ण खनिज: सिंगरौली कोलफील्ड्स**, सोनभद्र जिले में **कोयला**, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर और महोबा जिलों में **डायस्पोर** और **पाइरोफिलाइट।**
- **इलाहाबाद** के **नैनी क्षेत्र** में उच्च गुणवत्ता वाली **सिलिका रेत**, **कांच** की **रेत** का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसमें **98% SiO2** है, और बहुत **कम Fe2O3**, जों **इलाहाबाद** जिले के **शंकरगढ़**, **लोहारगठ** और **बांदा** जिले के **बरगढ़** में भी पाया जाता है।
    - यह **अलीगढ़** और **चित्रकूट** जिलों में भी पाया जाता है।

धात्विक खनिज

क्र.सं.	खनिज	स्थान	जिला	उपयोग
1.	बॉक्साइट	रजौआं	चित्रकूट	एल्युमिनियम, आग रोक उद्योग
2.	चीनी मिट्टी	नौडीहा, रामगढ़, गरदा	सोनभद्र	सिरेमिक, आग रोक उद्योग
3.	कोयला	कार्की, बीना, धुघीचुआ, खरिया	सोनभद्र	थर्मल पावर, सीमेंट, कार्मिक उद्योग आदि
4.	डायस्पोर	गढ़मऊ, मैलार, गौरारी, तोरी	झाँसी, महोबा, ललितपुर	आग रोक

5.	पाइरोफिलाइट	गढ़मऊ, मैलार, गौरारी, तोरी	झाँसी, महोबा, ललितपुर	आग रोक, सिरेमिक, तालक, कीटनाशक आदि
6.	फेल्डस्पार	खजराहा-बुजुर्ग	झांसी	सिरेमिक उद्योग
7.	सिलिका रेत	शंकरगढ़, बरगढ़, लालापुर	इलाहाबाद,चित्रकूट	कांच और फाउंड्री उद्योग
8.	ग्रेनाइट	कालापहाड़, खैलार, केवल, बिजौली	झाँसी, महोबा, ललितपुर, बांदा, सोमभद्रा	पॉलिश स्लैब और टाइलें
9.	डोलोमिंट	बरी	सोनभद्र	लोहा और इस्पात उद्योग
10.	चूना पत्थर	भलुआ, कजराहट, बिल्ली, घुरमा	सोनभद्र	सीमेंट और इस्पात उद्योग
11.	रॉक फॉस्फेट	पिसनारी और तोरी	ललितपुर	उर्वरक और तत्व फॉस्फोरस उद्योग
12.	सिलिमेनाइट	छिपिया	सोनभद्र	आग रोक उद्योग

- **धात्विक खनिज** वे खनिज होते हैं जिनमें **एक या अधिक धात्विक तत्व** होते हैं।
- जैसे: **बॉक्साइट**, **लोहा**, **तांबा**, **सोना**, **डायस्पोर** आदि।
- **बाक्साइट**
  - **क्षेत्र**: बांदा, चंदौली और ललितपुर।
    - **धातु ग्रेड बॉक्साइट चित्रकूट जिले** में मानिकपुर के दक्षिण में पाया जाता है।
  - **एल्युमीनियम उद्योग**, **रसोई** के **बर्तन** और **हवाई जहाज** के **पुर्जों में** प्रयोग किया जाता है**।**
- **ताँबा**
  - **तलछटी चट्टानों** में पाया जाता है, जिसमें **3% से 6% तांबा** होता है।
  - **क्षेत्र**: ललितपुर जिला।
  - **उपयोग**: भवन निर्माण, बिजली उत्पादन, पारेषण और इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद निर्माण।
- **लोहा**
  - **क्षेत्र**: मिर्जापुर जिला।
    - यहाँ **हेमेटाइट** और **मैग्नेटाइट लोहा** पाया जाता है।
  - **निम्न श्रेणी** के **लोहे** के बड़े **भंडार गिरर**, **ललितपुर** में पाए जाते हैं।
    - इन **भंडारों** का उपयोग **स्पंज आयरन बनाने** के लिए भी किया जाता है।
- **सोना**
  - **रामगंगा** और **शारदा** नदी की **रेत** में मिला।
  - जिला: **ललितपुर** और **सोनभद्र।**
- **डायस्पोर**
  - जिला: **झांसी**, **ललितपुर** और **महोबा**
  - यूपी: **डायस्पोर** के **उत्पादन** में **प्रथम स्थान।**

अधात्विक खनिज

- इन खनिजों में **धात्विक अंश नहीं** होता है।
- जैसे: **डोलोमाइट**, **कोयला**, **ग्लास सैंड**, **संगमरमर**, **चूना पत्थर**, **यूरेनियम हीरा**, **ग्रेनाइट** आदि।
- **डोलोमाइट**
  - **क्षेत्र** : **मिर्जापुर** में **कजरहाट सोनभद्र** के **बारी** गांव के पास करीब डेढ़ करोड़ टन होने का अनुमान है।
  - **पोर्टलैंड सीमेंट**, प्लास्टर ऑफ पेरिस और सल्फ्यूरिक एसिड में उपयोग किया जाता है, जिसका उपयोग **लौह इस्पात उद्योग** में भी किया जाता है।
- **कोयला**
  - क्षेत्र: **सोनभद्र जिले** में निचली गोंडवाना भूमि का **बराकर बेल्ट** और **मिर्जापुर** का **सिंगरौली क्षेत्र।**
  - **उपयोग**: मुख्य रूप से **कोयले** से **चलने** वाले **बिजली संयंत्रों** में **बिजली उत्पादन** के लिए **ऊर्जा स्रोत** के रूप में।
  - यूपी: **देश** में **कोयला भंडार** में **8वां स्थान**।
- **ग्लास और सैंड या सिलिका रेत**
  - **क्षेत्र**: **चंदौली** के चकिया क्षेत्र, **झांसी** के मुदरी और बालाबेहट और **प्रयागराज** जिले की करछना तहसील।
  - **सिलिका रेत** का उपयोग **बर्तनों**, **चश्मों**, **भवनों** आदि में किया जाता है।
  - यूपी: **सिलिका रेत** के **उत्पादन** में भारत में तीसरा स्थान।
- **संगमरमर**
  - क्षेत्र: **मिर्जापुर** और **सोनभद्र** जिला।
  - उपयोग: **भवन** और **फर्श**, **सौंदर्य प्रसाधन, पेंट** और **कागज।**
- **चीनी मिट्टी**
  - **क्षेत्र**: सोनभद्र जिले के नौडीहा, रामगढ़, कोन और जलालिया।
  - **उपयोग**: सिरेमिक और टूथपेस्ट।
  - **नौदिहा**, **रामगढ़** की **चीन मिट्टी** एक **निम्न श्रेणी** की **प्लास्टिक मि**ट्टी है।
    - **इसका** उपयोग **क्रॉकरी** के उ**त्पा**दन के लिए किया जाता है।
- **पोटाश नमक**
  - **क्षेत्र:** कानपुर, गाजियाबाद, इलाहाबाद और वाराणसी जिले। इसका **उपयोग उर्वरक** के रूप में किया जाता है।
- **चूना पत्थर**
  - यूपी: **चूना पत्थर** के भंडार में **भारत में दूसरा स्थान**।
  - क्षेत्र: **कनाच**, **गुरुमा**, **मिर्जापुर** के बाबूहारी और **सोनभद्र** के कजरहाट।
  - उपयोग: **सीमेंट कारखाना**।
- **यूरेनियम**
  - क्षेत्र: **ललितपुर जिला**।
  - उपयोग: **सेना** में **गैर-रेडियोधर्मी उद्देश्यों**, **बम बनाना**, **परमाणु ऊर्जा** आदि के लिए।

- **जिप्सम**
  - क्षेत्र: **झांसी** और **हमीरपुर** जिला
  - उपयोग: **वॉलबोर्ड**, **सीमेंट**, **प्लास्टर ऑफ पेरिस** और **मिट्टी** की **कंडीशनिंग** का निर्माण।
- **पायरोफिलाइट**
  - क्षेत्र: **झांसी** और **हमीरपुर** जिला।
  - उपयोग: **सिरेमिक उद्योग**, **कीटनाशक** और **रबर** के उत्पादन में।
- **टाल्क**
  - क्षेत्र: **हमीरपुर** और **झांसी।**
  - उपयोग: **टैल्कम पाउडर**, **साबुन**, **पेस्ट**, **कपड़ा**, **सौंदर्य उत्पाद** और **कागज।**
- **एस्बेस्टस**
  - क्षेत्र: **मिर्जापुर** जिला।
  - उपयोग: **सीमेंट उद्योग** और **बिजली** के **उपकरण।**
- **एण्डालुसाइट**
  - क्षेत्र: **मिर्जापुर** और **सोनभद्र** जिला।
  - उपयोग: **स्पार्क प्लग** और **चीनी मिट्टी** के **बरतन।**
- **हीरा**
  - क्षेत्र: **मिर्जापुर** और **बांदा** के कुछ इलाकों में।
  - **कालिंजर** के सीमावर्ती क्षेत्र **बांदा** में **हीरे** के बड़े **भंडार** होने की संभावना है.
- **रॉक फॉस्फेट**
  - क्षेत्र: **दुरमाला**, **किमाई**, **मसराना** और **चमसारी।**
  - **ललितपुर** में **निम्न श्रेणी** का **फास्फेट** पाया जाता है।
  - इसका उपयोग **उर्वरक उद्योग** और **अम्लीय मिट्टी** के **उपचार** में किया जाता है।
- **ग्रेनाइट**
  - क्षेत्र: **ललितपुर**, **झांसी**, **महोबा**, **बांदा** और **सोनभद्र।**
  - उपयोग: **ब्लॉक स्लैब** और **टाइल बनाना।**

उत्तर प्रदेश की खनन नीति, 2017

- **उत्तर प्रदेश खनन नीति, 2017** को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में **30 मई 2017** को **घोषित** किया गया था।

उद्देश्य

- खनिज का **संरक्षण।**
- **पर्यावरण** और **पारिस्थितिकी तंत्र** के बीच **संतुलन** बनाने के लिए।
- अगले 5 वर्षों में **राजस्व सृजन** को वर्तमान **1.85%** से बढ़ाकर **3%** करना।
- **निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा** की सुविधा के लिए।
- खनिजों के **वैज्ञानिक विकास** के लिए **तकनीकी सहायता** और **सलाहकार सेवाएं** प्रदान करना।
- **सूचना डेटा उपलब्ध** कराने के लिए।
- **तकनीकी हस्तक्षेप** के माध्यम से **खनिजों** की **खोज** को तेज करना।
- **पारदर्शिता** और **उपभोग मुक्त वातावरण** को बढ़ावा देना।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER उत्तर प्रदेश : कृषि उत्पादन

उत्तर प्रदेश में कृषि उत्पादन

- उत्तर प्रदेश की **अर्थव्यवस्था का आधार।**
- राज्य की लगभग **59.3% आबादी कृषि** में लगी हुई है।
- देश में लगभग **19.87% खाद्यान्न का उत्पादन** करता है।
    - खाद्यान्न उत्पादन की दृष्टि से अखिल भारतीय स्तर पर **प्रथम स्थान पर** है।

उत्तर प्रदेश के कृषि जलवायु क्षेत्र

9 कृषि जलवायु क्षेत्र-

कृषि जलवायु क्षेत्र	सम्मिलित क्षेत्र
भाबर और तराई क्षेत्र	हिमालय की तलहटी के क्षेत्र जैसे सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, लखीमपुर-खीरी, बहराइच, श्रावस्ती आदि।
मध्य पश्चिमी मैदान	बरेली और मुरादाबाद।
पश्चिमी मैदान	मेरठ मंडल और उसके आसपास का क्षेत्र।
दक्षिणी-पश्चिमी अर्ध-शुष्क मैदान	आगरा मंडल और उसके आसपास का क्षेत्र
मध्य मैदान	कानपुर और लखनऊ मंडल और फतेहपुर क्षेत्र
बुंदेलखंड क्षेत्र	झांसी और चित्रकूट संभाग
उत्तरी-पूर्वी मैदान	गोरखपुर मंडल और गोंडा के क्षेत्र।
पूर्वी मैदान	वाराणसी, फैजाबाद, आजमगढ़ मंडल और इलाहाबाद मंडल के कुछ क्षेत्र।
विंध्य क्षेत्र	मिर्जापुर, सोनभद्र और दक्षिणी इलाहाबाद।

विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्र से संबंधित मिट्टी

कृषि जलवायु क्षेत्र	मिट्टी	जिला
भाबर मैदान, तराई मैदान	जलोढ़ फास्फोरस में न्यूनतम से मध्यम,पोटेशियम मध्यम से उच्च और कार्बनिक पदार्थ उच्च मात्रा में।	अंचल के अंतर्गत विभिन्न जिलों के भागों को संबंधित कृषि-जलवायु क्षेत्र में शामिल किया गया है।
पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	जलोढ़, पीएच- सामान्य से क्षारीय और कार्बनिक पदार्थ न्यूनतम से मध्यम मात्रा	सहारनपुर मुजफ्फरनगर, बागपत,
मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	अधिकतर जलोढ़, पीएच सामान्य से थोड़ा क्षारीय और मध्यम मात्रा में कार्बनिक पदार्थ।	बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, बदायूं, पीलीभीत और शाहजहांपुर (7 जिले)
पश्चिमी उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र	जलोढ़ और अरावली	अलीगढ़, मथुरा, आगरा, फिरोजाबाद, एटा, मैनपुरी (6 जिले)
मध्य मैदानी क्षेत्र	जलोढ़, पीएच सामान्य से थोड़ा क्षारीय और मध्यम मात्रा में कार्बनिक पदार्थ।	फर्रुखाबाद, कन्नौज, इटावा, कानपुरनगर, कानपुरदेहात, उन्नाव, हरदोई, खीरी, सीतापुर, लखनऊ, रायबरेली, फतेहपुर, प्रतापगढ़ और इलाहाबाद (14 जिले)
बुंदेलखंड क्षेत्र	रकार, परवा, काबर और मार	ललितपुर, झांसी, जालौन, हमीरपुर, बांदा और चित्रकूट (7 जिले)
उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र	जलोढ़ और कैल्शियम युक्त मिट्टी	बहराइच, बलरामपुर, गोंडा, सिद्धार्थ नगर, बाश, महराजगंज, कुशीनगर और देवरिया (9 जिले)
पूर्वी मैदानी क्षेत्र	जलोढ़, सोडिक और डायरी मिट्टी	बाराबंकी, फैजाबाद, सुल्तानपुर, जौनपुर, आजमगढ़, मऊ, बलिया, गाजीपुर, वाराणसी और संत रविदासनगर (10 जिले)
विन्ध्य जोन	मैदानी इलाकों में काली भारी, लाल दानेदार और जलोढ़ मिट्टी	मिर्जापुर और सोनभद्र (2 जिले)

उत्तर प्रदेश में फसल उत्पादन

- उत्तर प्रदेश में मुख्य प्रकार की फसलें **रबी फसलें, खरीफ फसल और जायद** फसलें हैं। इन फसलों की संक्षेप में नीचे चर्चा की गई है:

रबी फसलें:

- इन फसलों को अक्टूबर से दिसंबर में सर्दियों के मौसम में बोया जाता है और फरवरी से अप्रैल के महीने में काटा जाता है।
- इन फसलों को कम पानी और औसत तापमान की आवश्यकता होती है।
- रबी की महत्वपूर्ण फसलें हैं गेहूँ, जौ, चना, मसूर, आलू, दालें आदि।
- उत्तर प्रदेश में **रबी एक महत्वपूर्ण फसल सीजन** है।
- रबी 2021 में खाद्यान्न तथा तिलहनी फसलों के अन्तर्गत **126.42 लाख हे0** का क्षेत्र आच्छादित हुआ एवं 399.52 लाख मे0 टन का उत्पादन हुआ।
- आगामी रबी 2022 में खाद्यान्न एवं तिलहनी फसलों के अन्तर्गत **130.04 लाख हे0 क्षेत्र** आच्छादन तथा **434.42 लाख मे0 टन उत्पादन** का लक्ष्य है।
- कुछ महत्वपूर्ण रबी फसलें नीचे दी गई हैं:

1. **गेहूँ:-**
   - यह राज्य के सबसे बड़े हिस्से में लगभग 24% कृषि भूमि में उत्पादित होता है।
   - गेहूं उत्पादन में **उत्तर प्रदेश का प्रथम स्थान** है।
   - गंगा-यमुना और गंगा-घाघरा दोआब सबसे बड़ा गेहूं उत्पादक क्षेत्र है जिसमें गोरखपुर, मेरठ, बुलंदशहर, सहारनपुर, आगरा, अलीगढ़, मुजफ्फरनगर, मुरादाबाद, कानपुर, इटावा, फर्रुखाबाद और फतेहपुर गेहूं के मुख्य उत्पादक हैं।
   - उच्च वर्षा के कारण उत्तर प्रदेश के **पूर्वी और उत्तर-पूर्वी जिलों** में गेहूं की कम उपज होती है।
2. **चना:-**
   - यह राज्य में सभी अनाज फसलों में सबसे अधिक उगाने वाली फसल है।
   - बांदा, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, जालौन, मिर्जापुर, सोनभद्र, कानपुर, फतेहपुर, सीतापुर, बाराबंकी, इलाहाबाद और आगरा मुख्य जिले हैं जहाँ चना उगाया जाता है।
   - **हमीरपुर राज्य** में चने का सबसे बड़ा उत्पादक है।
3. **सरसों:-**
   - यह राज्य में सभी तिलहन फसलों में सबसे अधिक उगाए जाने वाली फसल है।
   - राजस्थान के बाद **उत्तर प्रदेश भारत में सरसों का चौथा सबसे** बड़ा उत्पादक है।
   - गोंडा, बहराइच, मिर्जापुर, सहारनपुर, सोनभद्र, कानपुर, सीतापुर, एटा, मेरठ, फैजाबाद, इटावा, सुल्तानपुर, मथुरा, अलीगढ़ और बुलंदशहर मुख्य जिले हैं जहाँ सरसों की खेती की जाती है।
4. **जौ:-**
   - रेतीली और जलोढ़ मिट्टी इसके लिए सबसे उपयुक्त दशाएँ है।
   - यह छोटी परिपक्वता अवधि वाली फसल है और इसमें सूखा सहन करने की अच्छी क्षमता है। इसकी भौगोलिक स्थिति गेहूँ के समान है।
   - राजस्थान के बाद **उत्तर प्रदेश जौ का दूसरा सबसे बड़ा** उत्पादक है।
   - जौ की खेती वाराणसी, आजमगढ़, जौनपुर, बलिया, मऊ, गाजीपुर, गोरखपुर, एटा, इलाहाबाद और प्रतापगढ़ जिले में होती है।

खरीफ फसलें:

- मानसून (बरसात के मौसम) में उगाई जाने वाली फसलें खरीफ फसलें कहलाती हैं।
- फसलों के बीज मानसून के मौसम की शुरुआत (मई से जुलाई) में बोए जाते हैं। परिपक्वता के बाद, इन फसलों को सितंबर से अक्टूबर तक मानसून के मौसम के अंत में काटा जाता है।
- इन फसलों को उच्च तापमान और अधिक पानी की आवश्यकता होती है।
- इस मौसम की महत्वपूर्ण फसलें चावल, कपास, जूट, गन्ना, अरहर, बाजरा, मूंगफली, मक्का आदि हैं। खरीफ मौसम की प्रमुख फसलों की चर्चा नीचे की गई है:

1. **चावल:-**
   - **उत्तर प्रदेश** चावल के उत्पादन में **पश्चिम बंगाल के बाद भारत में दूसरे स्थान** पर है।
   - यह तराई क्षेत्र में बोया जाता है जिसमें श्रावस्ती, महाराजगंज, बहराइच, कुशीनगर, देवरिया, बलरामपुर, शाहजहांपुर, मऊ, वाराणसी, लखनऊ, बलिया, सहारनपुर और पीलीभीत जिले शामिल हैं।
   - **शाहजहांपुर** में चावल बड़े पैमाने पर उगाया जाता है।
2. **जूट:-**
   - यह एक रेशेदार फसल है जो तराई पट्टी और सरयू और घाघरा दोआब में उगाई जाती है।
   - बहराइच, महाराजगंज, देवरिया, गोरखपुर, गोंडा, सीतापुर और लखीमपुर-खीरी जूट की खेती के प्रमुख केंद्र हैं।
   - यह फसल अप्रैल-मई में बोई जाती है और अगस्त-सितंबर में काटी जाती है।
3. **गन्ना:-**
   - यह **राज्य की सबसे महत्वपूर्ण नकदी** फसल है।
   - गन्ने के उत्पादन की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का **देश में प्रथम स्थान** है।
   - यह राज्य की कुल कृषि योग्य भूमि के **13% भाग पर** बोया जाता है।
   - इसके लिए 100- 200 सेमी वर्षा और चिकनी दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है।
   - इसे दो बेल्टों में उगाया जाता है:

- **तराई बेल्ट:** इसमें रामपुर, बरेली, पीलीभीत, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, गोंडा, फैजाबाद, आजमगढ़, मऊ, जौनपुर, बस्ती, बलिया, महाराजगंज, देवरिया और गोरखपुर जिले शामिल हैं।
- **गंगा-यमुना दोआब:** इसमें मेरठ, मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, बुलंदशहर, अलीगढ़, सहारनपुर और मुरादाबाद जिले शामिल हैं। मुजफ्फरनगर गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक है। उत्तर प्रदेश गन्ना अनुसंधान परिषद की स्थापना 1912 में शाहजहांपुर में हुई थी।

4. **सूती:-**
   - यह राज्य में गंगा-यमुना दोआब, रोहिलखंड और बुंदेलखंड क्षेत्रों में सिंचाई की सहायता से उगाया जाता है। इन क्षेत्रों में, कपास की विभिन्न किस्में उगाई जाती हैं जैसे यूपी देसी, बंगाल कपास, पंजाब कपास, अमेरिकी कपास, आदि।
   - सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, गाजियाबाद, बुलंदशहर, आगरा, अलीगढ़, फिरोजाबाद, मुरादाबाद, रामपुर, कानपुर, बरेली, मैनपुरी, मथुरा, फर्रुखाबाद और इटावा राज्य के कुछ जिले हैं जहां कपास उगाया जाता है।
5. **अरहर:-**
   - यह राज्य में एक महत्वपूर्ण अनाज की फसल है। इस फसल के साथ बाजरा और जौ बोया जाता है। वाराणसी, झांसी, ललितपुर, इलाहाबाद, हमीरपुर और लखनऊ प्रमुख जिले हैं जहां अरहर की दालें उगाई जाती हैं।
   - हमीरपुर अरहर की फसल का सबसे बड़ा उत्पादक है।
6. **बाजरा:-**
   - यह मई और जुलाई में उगाया जाता है और सितंबर और दिसंबर में काटा जाता है।
   - इसका उत्पादन आगरा, अलीगढ़, मुरादाबाद, मथुरा, बदायूं, फिरोजाबाद, इटावा, मणिपुरी, कानपुर, गाजियाबाद, फर्रुखाबाद और प्रतापगढ़ जिलों द्वारा किया जाता है।
   - अलीगढ़ राज्य में बाजरा का सबसे बड़ा उत्पादक है।
7. **मूंगफली:-**
   - यह मुख्य रूप से सीतापुर, हरदोई, एटा, बदायूं, मुरादाबाद आदि जिलों में छोटे पैमाने पर उगाया जाता है।
   - शुष्क जलवायु के कारण मूंगफली की खेती में अधिक समय लगता है। इसे विकास के लिए रेतीली मिट्टी की जरूरत होती है।
   - यह जून और जुलाई में बोया जाता है और नवंबर और दिसंबर में काटा जाता है।
8. **मक्का:-**
   - भारत में मक्का के उत्पादन में उत्तर प्रदेश का तीसरा स्थान है। यह बरसात की फसल है।
   - यह मेरठ, गाजियाबाद, बुलंदशहर, फर्रुखाबाद, गोंडा, जौनपुर, एटा, फिरोजाबाद और मैनपुरी जिलों में उगाया जाता है।
   - मैनपुरी राज्य में मक्का का सबसे बड़ा उत्पादक है।

जायद फसलें:

- जायद की फसल रबी और खरीफ फसलों के बीच बोई जाती है।
- इन्हें मार्च-अप्रैल में उगाया जाता है और जून-जुलाई में काटा जाता है।
- जायद की फसलों को बढ़ने के लिए गर्म शुष्क मौसम और फूल आने के लिए दिन की लंबी अवधि की आवश्यकता होती है।
- जायद की मुख्य फसलें तरबूज, खरबूजा, करेला, कद्दू, खीरा और मौसमी फल और सब्जियां हैं।

उत्तर प्रदेश में कृषि विविधता

- उत्तर प्रदेश भारत के उत्तरी भाग में स्थित एक राज्य है और इसका विविध कृषि परिदृश्य है।
- राज्य अपने समृद्ध कृषि उत्पादन के लिए जाना जाता है,
- कृषि इसकी अधिकांश आबादी के लिए आजीविका का प्राथमिक स्रोत है।
- उत्तर प्रदेश में रबी ,खरीब एवं जायद तीनों फसलों का उत्पादन होता है साथ ही फलों एवं मसालों का भी उत्पादन होता है
- उत्तर प्रदेश में उगाई जाने वाली मुख्य फ़सलें चावल, गेहूँ, गन्ना, मक्का और दालें हैं।
- इनके अलावा, राज्य आम, अमरूद और केला जैसे फलों और आलू, टमाटर और प्याज जैसी सब्जियों का भी उत्पादन करता है।
- यह राज्य मिर्च, धनिया, जीरा और मेथी जैसे मसालों के उत्पादन के लिए भी जाना जाता है।
- फसलों के अलावा, उत्तर प्रदेश अपने पशुधन उत्पादन, विशेष रूप से डेयरी फार्मिंग के लिए भी जाना जाता है।
- राज्य मवेशियों की कई देशी नस्लों का घर है, जिसमें प्रसिद्ध मुर्रा भैंस भी शामिल है, जो अपनी उच्च दूध उपज के लिए जानी जाती है।
- उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार ने कृषि को बढ़ावा देने और उत्पादकता बढ़ाने के लिए कई पहल की हैं।
- इन पहलों में जैविक खेती को बढ़ावा देना, कृषि उपकरणों के लिए सब्सिडी का प्रावधान और किसान उत्पादक संगठनों की स्थापना शामिल है।
- कुल मिलाकर, उत्तर प्रदेश का विविध कृषि उत्पादन राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है और इसकी आबादी के लिए आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

कृषि के क्षेत्र मे राज्य सरकार के प्रयास-

तात्कालिक प्रयास-

- **समर्थन मल्य (एमएसपी) की घोषणा** के जरिए किसानों की आय को सुरक्षा प्रदान किया जा रहा है।
- **मण्डी कानून में सुधार कर** बिचौलियों के हस्तक्षेप को कम करके किसानों के उत्पादों को उचित कीमत दिलाने का प्रयास किया जा रहा है।
- **कृषि ऋण पर ब्याज अनुदान** उपलब्ध कराया जा रहा है।
- **कृषि ऋण माफी योजना** के तहत किसानों के ऋण को माफ किया गया है।